पंवार(पोवार) समाज के ३६ कुल

सन १७०० के दरम्यान पश्चिम मालवा से एक बड़ा सैन्य समूह नागपुर जिले में रामटेक के समीप नगरधन किले में आकर रुका और वहाँ से पंवार आज के गोंदिया, सिवनी, भंडारा, बालाघाट जिलों में जा बसे। पंवारों के मात्र ३६ कुल होने की बात बड़े बुजुर्ग बताते हैं। हालाँकि अब मात्र ३१ के करीब कुल पाए जाते हैं। ३६ कुलों की जानकारी निम्नलिखित है—

१) अम्बुले / अमुले

पोवारी भाषा में इस कुल को अम्बुल्या या अम्बुलिया कहा जाता था। पंवार बुजुर्ग इस कुल नाम का अर्थ जलधारी, जल से उत्पन्न, जल के समीप रहने वाला, कमल रूपी सुंदर व्यक्ति बताते हैं। संभवतः वे संस्कृत शब्द अम्बुज यानी कमल से इसका संबंध जोड़ते हैं। हालाँकि, यह कुल उन पोवारों का है जो आबू से आए थे। संभवतः इन्हें पहले आबुवाले कहा जाता रहा होगा, जो बाद में अपभ्रंश होकर आम्बुले/अम्बुले हो गया।

२) कटरे – कटरा (देशमुख भी लिखते हैं महाराष्ट्र में)

इनको सेंडिया भी कहा गया है। सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ४०८ पर सेंडिया को पंवार राजपूतों की एक उपाधि बताया गया है, जो जाति के मुखिया की होती थी। इतिहासकार रसेल कटरे नामक कुल का उल्लेख भी करते हैं, जो सनाढ्य ब्राह्मणों का कुल है।

सेंडिया और सनाढ्य ब्राह्मणों के एक कुल का नाम कटरे होना एक संयोग है या इसके पीछे कोई ऐतिहासिक कारण है, यह विचारणीय है। खास बात यह थी कि जाति के किसी व्यक्ति द्वारा गलती करने पर

उसे शुद्ध करने का अधिकार कटरे यानी सेंडिया पंवारों को था। सेंडिया का अर्थ मुख्य या शीर्ष बताया जाता है। कुछ कटरे परिवारों को देशमुख की पदवी भी मिली हुई थी, इसलिए कुछ लोग अपने कुल को देशमुख भी लिखते हैं। भाट कटरा कुल को काठी क्षत्रिय कहते हैं। पहले कटरिया / कटरा इस प्रकार का संबोधन होता था, अब कटरे लिखा जाता है। ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि कठोपनिषद लिखने वाले कठ ऋषि के वंशज आज के कटरिया / कटरिया कुल के लोग हैं।

अलेक्ज़ेंडर से युद्ध के वर्णन में सिंध प्रांत के काठी क्षत्रियों का उल्लेख आता है, जो बाद में राजपुताना, मध्य भारत और गुजरात में जा बसे थे, जिसमें पोवारगढ़ का उल्लेख मिलता है।
अब पोवारगढ़ को पावागढ़ कहा जाता है।

३) कोल्हे – कोलीहया

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३७९ पर यह पंवारों का एक कुल बताया गया है। कोली नामक एक प्राचीन गोत्र था, जिसमें वैदिक ऋषि प्रवर थे। भाटों ने पोवारों की वंशावली में सप्तर्षियोंका उल्लेख किया है।

४) गौतम

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३६४ पर गौतम कुल को पंवारों का एक कुल बताया गया है।यह एक संस्कृत / वैदिक नाम है और इसका संबंध प्राचीन गौतम ऋषि से है। गौतम ऋषि सप्तर्षियों में एक थे, यह जानकारी पौराणिक कथाओं से मिलती है।

५) चौहान

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३५४ पर चौहान को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है।चौहान अग्नि कुल की चार शाखाओं में से एक है, जो मध्य भारतीय ३६ पंवार कुलों में शामिल है।

६) चौधरी

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३५४ पर चौधरी को पंवारों का एक कुल बताया गया है। गाँव के मुखिया, महाजन, सम्मानित और प्रतिष्ठित लोगों को यह उपाधि दी जाती थी।

७) जैतवार

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३६८ पर जैतवार को मुख्य राजपूतों का एक वंश बताया गया है। पोरबंदर के राणा जैतवार थे, यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है।

८) ठाकुर / ठाकरे – ठाकुर / ठाकरिया

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ४१४ पर ठाकुर को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है।शिलालेखों में ठक्कुर शब्द का उल्लेख मिलता है। ठाकुर शब्द ईश्वर के लिए भी प्रयुक्त होता है। यह क्षत्रियों और राजपूतों की एक उपाधि के रूप में भी प्रचलित था।

९) टेंभरे / टेमरे – टेम्भरिया

Rājasthāna kī Sāṃskr̥tika Paramparāeṃ̐ (Maharaja Man Singh Pustak Prakash Shodh-Kendra, 2006) के पृष्ठ क्रमांक १२७ पर श्री महेंद्रसिंह तंवर लिखते हैं—"संभवतः तोमर (एक प्रकार का शस्त्र) से वार करने में कुशल योद्धा को तंवर या तुंवर कहा जाता था।"अन्य ऐतिहासिक संदर्भों में भी तोमर और तंवर को एक प्रमुख राजपूत वंश बताया गया है।संभवतः तोमर से तेमरे और फिर टेम्भरे जैसे अपभ्रंश हुए।

१०) तुरकर / तुरुख, तुरुक

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ४१५/४१६ पर तुरकर / तुरुख को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। भाट इनको तंवर कहते हैं। पर विजय पाने वाले पंवार तुरुक—ऐसा इसका अर्थ किया जाता है।ये बड़े वीर थे। राजा भोज ने भी तुर्कों को परास्त किया था। बहुत प्राचीन समय में तुरुष्क राजा भी थे, यह भी ध्यान देने योग्य बात है। क्षत्रिय कुल प्राचीन क्षत्रिय राजाओं के नामों से भी प्रचलित हुए हैं। तूर्णकरनी नामक एक प्राचीन गोत्र था, जिसमें वैदिक ऋषि प्रवर थे। संभवतः तूर्णकरनी का अपभ्रंश तुरकर हुआ हो। भाटों की पोवार वंशावली में सप्तर्षियों का उल्लेख है।

११) पटले (देशमुख भी लिखते हैं मध्यप्रदेश में)

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३९९ पर यह पंवार राजपूतों की एक उपाधि बताई गई है। प्राचीन समय में Pattala (पट्टल)

का अर्थ किसी जिले या विशिष्ट क्षेत्र से होता था। उस क्षेत्र के प्रमुखों को पट्टलिक: या पट्टकिल: कहा जाता था। शिलालेखों में इन शब्दों का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। पटेल, पटले, पटला आदि शब्द इन्हीं संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश हैं। अर्थात, पटला या पटले कुल के पूर्वज प्राचीन समय में किसी क्षेत्र के प्रमुख रहे होंगे। परमारों के पटला कुल का उल्लेख धन्धुकपूरा में मिले सन १२९० के शिलालेख में मिलता है। उसमें "परमारा पटला सूत अर्जुन" ऐसा उल्लेख है। इससे स्पष्ट होता है कि परमारों (पोवारों) में पटला यह कुल या उपाधि नाम उस समय भी था।

१२) परिहार

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३९७ पर परिहार को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। यह एक अग्निवंशी कुल है, जो मध्य भारतीय पंवार समुदाय में शामिल है।

१३) पारधी या पारदी

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३९७ पर पारधी को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। यह शिकार करने में निपुण पंवारों का कुल कहा जाता है। पारधी यह एक संस्कृत शब्द भी है। संभावना यह भी है कि पारधिया / पारदिया शब्द "पार्थिया" (Parthia) से अपभ्रंशित हुआ हो। जेम्स टॉड की पुस्तक Annals and Antiquities of Rajasthan में परमार तेजा पारदी का उल्लेख है।

१४) पुंड

पुंड कुल मूलतः पुंडीर क्षत्रिय कुल है।

१५) बघेले / बघेल – बघेला

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३४४ पर बघेला को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। इसका अर्थ मनुष्यों में शेर जैसा होता है। इनके नाम से ही भारत में बघेलखंड क्षेत्र का नाम पड़ा, ऐसा रसेल लिखते हैं। इतिहास से यह पता चलता है कि बघेला मूलतः अग्निवंशी चालुक्य (सोलंकी) क्षत्रिय हैं। राजा उदयादित्य की एक पत्नी बघेला कुल की बेटी थी। हिमाचल प्रदेश में बघेला पंवार कुल की "बाघल रियासत" थी, और उन्हें राजा भोज के वंशज कहा जाता है।

१६) बिसेन – बिसना

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३५२ पर बिसेन को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। पंवार बुजुर्ग मानते हैं कि बिसेन यानी "विश्वेन" होता है। भगवान विष्णु को लोकभाषाओं में बिष्णु कहा जाता था। वैष्णव समुदाय को बीसनव कहा जाता था, जिससे "बिसन्या" शब्द का अपभ्रंश हुआ। हालाँकि, कुछ लोग मानते हैं कि यह "विश्वसेन राजा" के वंशज हैं, जो "विश्वेन" कहलाए और बाद में "बिसेन" हो गए।

१७) बोपचे – बोपच्या

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३५२ पर बोपचे को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। रसेल इस कुल को बोपची लिखते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि "बोपचे" कुल का अर्थ वाकपटु (अच्छी तरह से बोलने वाला) होता है।

१८) भगत / भक्तवर्ती

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३४८ पर भगत को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। रसेल के अनुसार, "भगत" का अर्थ "भक्त" होता है।

१९) भैरम

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३४८/३४९ पर भैरम को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। रसेल के अनुसार, "भैरम" को "भैरव / भैरो" कुल भी कहा जाता है। इसका अर्थ "भेरी" यानी भीषण और भयानक रूप से ललकार कर युद्ध करने वाले वीर" होता है।

२०) एडे / येड़े – येडा

येड़े कुल को पोवारी भाषा में "येडा" कहा जाता था। भाट अपनी पोथी में "येड़े कुल" को "हाड़ा" बताते हैं। हाड़ा राजपूतों की एक शाखा है।

२१)राणा

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces (Volume 1) के पृष्ठ क्रमांक 401 पर इसे पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। अपभ्रंश रूप में इसे "राणे" भी लिखा जाता है राणा कुल एक प्रसिद्ध कुल है, जो राजा की उपाधि को परिभाषित करता है।

२२) राहांगडाले / रहांगडाले - राहांगडाला –

इस कुल के लोग पंवारों में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। भाट इन्हें अत्यंत वीर बताते हैं। पोवारी भाषा में इस कुल को "रहांगडाला" कहा जाता है। कई बार पोवारी में इस कुल के लोगों को "रांगडया" भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है ऊँचा, धृष्ट, पुष्ट, वीर और निडर व्यक्ति। संभावना है कि ये धारानगर के पंवार राजा उदयादित्य की बघेला कुल की रानी के पुत्र राणा रणधवल के वंशज हैं, जिन्हें रणधाला, रंग्दाला या रहांगडाला कहा गया। पंवारों के इस विशेष कुलनाम के पीछे निश्चित रूप से कोई ऐतिहासिक कारण रहा होगा। भाट इस कुल को रांघडाले कहते हैं और इन्हें प्राचीन राठौड़ बताते हैं, लेकिन राठौड़ से रांघडाले का अपभ्रंश होना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि रहांगगढ / रांघगढ़ / रांगगढ़ से आए पंवारों के लिए यह कुलनाम प्रचलित हुआ होगा। राजस्थान में प्राचीन काल में रांगगढ़ नामक स्थान था।

२३) रिनाईत / रिनाहित / रिणायत

इस कुल का अर्थ रणाहत, यानी युद्ध में आहत पंवार होता है।

२४) शरणागत

यह संस्कृत शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है शरण में आया हुआ।

२५) सहारे

सहारे या सहारिया का अर्थ आश्रयदाता पंवार बताया जाता है।

२६) सोनवाने

सोनवानिया का अर्थ स्वर्ण के समान, अर्थात सुंदर, गौरवर्णीय पंवार बताया जाता है।

२७) हनवत / हनुवत

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces (Volume 1) के पृष्ठ क्रमांक 368 पर इसे पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है।

२८)हरिणखेडे/हरिनखेरे-हरणखेडा

इस कुलनाम की उत्पत्ति को लेकर कुछ प्रमुख तर्क प्रस्तुत किए गए हैं:

- कुछ बुजुर्गों का मानना है कि ये पंवार हिरण के शिकारी रहे होंगे।
- कुछ लोगों के अनुसार, "हिरण" शब्द के साथ "खेडा" (शिकारी) का कोई संबंध नहीं प्रतीत होता। संभवतः हिरण को खदेड़ने (भगाने) की प्रक्रिया से "हरिनखेडया" नाम पड़ा होगा।
- पंवारों ने मालवा से स्थानांतरित होकर कुछ समय बुंदेलखंड में व्यतीत किया। होशंगाबाद के पास एक हिरणखेडा गाँव स्थित है। यह संभव है कि हरणखेडा कुलनाम वाले पंवारों ने इस गाँव की स्थापना की हो।
- सिवनी की एथनोलॉजिकल रिपोर्ट में इस कुल को अंग्रेजों ने अपने ढंग से Hurmukurria लिखा है, जिससे यह प्रतीत होता है कि पहले "खेडया" या "खेरया" के स्थान पर कुरया रहा होगा।
- भाटों की पोथियों में हरणखेडा को परमारों की हूण शाखा बताया गया है।
- उज्जैन से रतलाम की ओर जाते समय हूणखेडी नामक गाँव पड़ता है, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस कुल के पंवारों ने हूणखेडी गाँव बसाया होगा।

- एक और तर्क यह है कि इस कुलनाम की उत्पत्ति हरिकर्ण शब्द से हुई हो सकती है। हरिकर्ण वैदिक ऋषि और परमारों की वंशावली में उल्लिखित सप्तर्षियों में से एक थे।

२९)क्षीरसागर

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces (Volume 1) के पृष्ठ क्रमांक 381 पर इसे पंवारों का एक कुल बताया गया है। यह संस्कृत शब्द है।

३०)फरीदाले

यह कुल मध्य भारत के पंवारों में नहीं पाया जाता। सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces (Volume 1) के पृष्ठ क्रमांक 362 पर इसे पंवारों का एक कुल बताया गया है। भाट इस कुल को दाहिया राजपूत बताते हैं। यह कुल अब मध्य भारत के ३६ कुल पंवारों में नहीं पाया जाता।

३१) रजहांस

यह कुल मालवा से स्थानांतरित नहीं हुआ या संभवतः अन्यत्र चला गया।

३२) रंदिवा

यह कुल मध्य भारत के पंवारों में नहीं पाया गया। यह मूलतः शिलालेखों में उल्लिखित रणदेवा है।

३३)रणमत्त

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces (Volume 1) के पृष्ठ क्रमांक 401 पर "रहमत" को पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है। हालांकि, रहमत जैसा कोई कुल हिंदू समाज में नहीं पाया जाता, जिससे यह स्पष्ट होता है कि रसेल

ने गलती से इसे इस प्रकार लिखा। संभवतः यह रणमत्त या रणमात शब्द का अपभ्रंशित रूप है, जिसका अर्थ है जो रण में मत्त रहते हैं, वे पंवार।

३४)रावत

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित The Tribes and Castes of the Central Provinces (Volume 1) के पृष्ठ क्रमांक 402 पर इसे पंवार राजपूतों का एक कुल बताया गया है।रावत कुल के क्षत्रियों का उल्लेख शिलालेखों में मिलता है।

३५) डाला

यह कुल मध्य भारत के पंवारों में नहीं पाया जाता। संभवतः यह परमारों की डाहलिया शाखा रही होगी।

३६) भोएर

हालाँकि, इस कुलनाम के कुछ परिवार सिवनी के पंवार बहुल क्षेत्रों में पाए गए हैं। इसका अर्थ खेती करने वाले या भोर में जागने वाले बताया जाता है।

पंवार(पोवार) समाज की मूल पहचान और छत्तीस कुलों की परंपरा

पंवार(पोवार) समाज का इतिहास गौरवशाली और संगठित रहा है, जिसकी पहचान छत्तीस कुलों की परंपरा से जुड़ी है। प्राचीन ग्रंथों, ब्रिटिशकालीन दस्तावेजों और समाजशास्त्रियों के शोधों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि पंवार(पोवार) समाज के केवल छत्तीस कुल होते हैं और विवाह इन्हीं कुलों में किया जाता है। समाज की इस संरचना में किसी प्रकार की उपजाति या अन्य कुलों का अस्तित्व नहीं रहा है।

1. बीसलदेव रासो में छत्तीस कुलों का प्रमाण : प्रसिद्ध ग्रंथ बीसलदेव रासो में उल्लेख मिलता है कि राजा भोज की पुत्री अपने दुख में छत्तीस कुल क्षत्रियों से सहायता मांगती है और कहती है— "मेरी जाति पंवार है,

हे छत्तीस कुल क्षत्रिय, मेरी सहायता करो।" यह स्पष्ट करता है कि छत्तीस कुलों की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है, और पंवार(पोवार) समाज की पहचान केवल इन्हीं कुलों से जुड़ी है।

2. **1890 में 'पंवार धर्मोपदेश' में छत्तीस कुलों का उल्लेख :** 1890 में लिखित 'पंवार धर्मोपदेश' में यह उल्लेख है कि, "पंवारों के छत्तीस कुल धाम के समान हैं और इन्हें भूलना नहीं चाहिए।"इसी ग्रंथ के आधार पर पंवार जाति सुधारनी सभा की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य पंवार(पोवार) समाज का उत्थान और छत्तीस कुलों की परंपरा की रक्षा करना था।

3. ब्रिटिशकालीन दस्तावेजों में छत्तीस कुलों की पुष्टि : ब्रिटिश शासनकाल के दस्तावेजों में स्पष्ट रूप से दर्ज है कि पंवार(पोवार) समाज में विवाह केवल छत्तीस कुलों में होता है और समाज की कोई उपजाति नहीं होती। यह इस बात का प्रमाण है कि पंवार(पोवार) समाज सदियों से अपनी मूल संरचना को बनाए हुए था।

मध्य भारत मे पंवारों की संख्या

- १७०० के दशक में – लगभग १०,०००
- १७५० के दशक में – लगभग २०,०००
- १८७२ की जनगणना – ९३,०८६ (सेंट्रल प्रोविंस में)
- १८८१ की जनगणना – १,०६,०८१
- १८९१ की जनगणना – १,२८,१५८

संदर्भ: -पोवार(2022)

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार(पोवार) महासंघ